28 सितम्बर 2018 को मुम्बई में श्रीमती मीना मंगेशकर खडीकर द्वारा सुर–साम्राज्ञी 'भारत–रत्न' लता मंगेशकर जी के जीवन पर लिखित पुस्तक ''मोठी तिची सावली'' पुस्तक के विमोचन के अवसर पर माननीय लोक सभा अध्यक्ष का भाषण।

————

1. 'भारत रत्न' लता मंगेशकर जी के 90वें जन्मदिवस के अवसर पर आज यहां आप लोगों के बीच आना मेरे लिए हर्ष, सौभाग्य और सम्मान की बात है। इस अवसर पर, मैं स्वयं को सम्मानित महसूस कर रही हूं।

2. सुर और संगीत परमात्मा का वरदान है जो प्रकृति की गोद से उपजा है और कलाकार ने उसे साध लिया। इस प्रकार जो व्यक्ति सुरों की साधना करता है, वह स्वयमेव साधक बन जाता है प्रकृति और उसके रचनाकार परमात्मा का।

3. लता जी जैसे प्रतिष्ठित व्यक्तित्व के बारे में कुछ कहना, चौथे दशक के मध्य से आज के दिन तक हिंदी फिल्म उद्योग के इतिहास के बारे में बात करने के समान है। लता जी और भारतीय फिल्म संगीत को लगभग पर्यायवाची माना जा सकता है। उन्होंने न केवल पार्श्वगायन बल्कि गायन की अन्य विधाओं जैसे सुगम संगीत, शास्त्रीय संगीत, भजन, गज़ल, ठुमरी, दादरा जैसे लोकगीतों में भी अपनी गायन की प्रतिभा को प्रमाणित किया है।

4. इस अवसर पर सबसे पहले मैं लता जी को जन्मदिन की शुभकामनाएं देती हूं। आज वह 90 वर्ष की हो रही हैं। इस शुभ अवसर पर मैं उनके उत्तम स्वास्थ्य और आनंदित जीवन की शुभकामनाएं देती हूं।

5. मैं आने वाले वर्षों में उनको ऐसे अनेक जन्मदिवसों की शुभकामनाएं देती हूं। मेरी ईश्वर से यही कामना थी कि वे यहां आकर इस अवसर की शोभा बढ़ा पाती। परंतु, मैं यह जानती हूं कि लता जी इस आयोजन को बड़े गर्व, हर्ष और प्रसन्नता के साथ देख रही होंगी।

6. उनके बारे में यह कहते हुए गर्व का अनुभव होता है कि इन्दौर की एक सुर–साधिका आज जीवित किवंदंती के रूप में हमारे बीच मौजूद हैं और जो संपदा उन्होंने संगीत प्रेमियों, जन–जन के लिए छोड़ी है, उस उपकार को चुका पाना हमारे बस में नहीं। उनकी आवाज़ सिर्फ हमारे कानों तक नहीं वरन् अवचेतन मन की गहराईयों में प्रवेश कर जाती हैं। **संगीत के जानकार कहते हैं कि उनकी आवाज़ ईश्वरीय (divine) है। वे अद्वितीयस्वरी हैं।** हमें संगीत सम्राट तानसेन को सुनने का सौभाग्य भले न मिला हो, लेकिन लता जी के गीतों को सुनकर, उनके संगीत को समझकर ऐसा अवश्य महसूस होता है कि हम लोग बहुत भाग्यशाली हैं और निश्चय ही प्रभु की कृपादृष्टि रही है कि लताजी ने हमारे समय में गायन किया है।

7. उनके बारे में सुमित्रानन्दन पन्त जी की निम्नलिखित पंक्तियां अत्यन्त ही सटीक लगती हैं:–

''बिन्दु में हो तुम सिन्धु अनन्त, एक सुर में समस्त संगीत।

एक कलिका में अखिल वसन्त, धरा में हो स्वर्ग पुनीत।।''

8. उनके पिता मास्टर दीनानाथ मंगेशकर स्वयं शास्त्रीय संगीत के निष्णात सुर–साधक थे एवं उन्होंने संगीत साधना की इस परम्परा को अपने कुशल बेटे–बेटियों के हाथ में सौंपा।

9. लता जी के बारे में कहीं पर मैंने पढ़ा था कि हो सकता है कि आने वाली पीढ़ी इस बात पर यकीन ही न करें कि यह आवाज किसी इन्सान की आवाज हो सकती है, बल्कि इस आवाज को किसी कम्प्यूटर सॉफ्टवेयर के तकनीक संयोजन से तैयार की गई सम्पूर्ण एवं आदर्श आवाज़ मानने लगे। सचमुच लताजी एक जीती–जागती किवंदंती हैं।

10. वे एक अलहदा–सी सुवास हैं, अब उसे कोई नाम नहीं दिया जा सकता, पर महसूस किया जा सकता है, यह तत्व अन्य गायक–गायिका में दुर्लभ है, उनके गले में तुलसी की पत्ती है, साक्षात् सरस्वती का वास है।

11. लता जी महज गायिका नहीं अपितु अपने समय की समग्र संस्कृति बन गई हैं। उनके गीतों के कारण चित्रपट संगीत को विलक्षण लोकप्रियता प्राप्त हुई है। यही नहीं, लोगों का शास्त्रीय संगीत की ओर देखने का दृष्टिकोण भी एकदम बदला है। इन सबका श्रेय लताजी को ही है जिन्होंने अपने गीतों के माध्यम से संगीत के संस्कार पीढ़ियों में पुष्पित–पल्लवित किए हैं। सामान्य मनुष्य में भी संगीत विषयक अभिरूचि पैदा करने में उन्होंने बहुत बड़ा योगदान किया

है। संगीत की लोकप्रियता, उसका प्रसार एवं अभिरूचि के विकास का श्रेय उन्हें देना ही पड़ेगा। यहां तक कि लोक सभा में हिन्दी भाषा पर चर्चा के दौरान 70 के दशक में दक्षिण के एक सांसद ने सरकार की आलोचना करते हुए यह कहा था कि सरकार ने हिन्दी भाषा के प्रचार–प्रसार के लिए आवश्यक प्रयास नहीं किए और उन सांसद महोदय ने यह भी कहा कि हिन्दी के प्रचार–प्रसार के लिए सरकार से ज्यादा योगदान लता जी और हेलन जी का है क्योंकि दक्षिण में आम लोग लता जी का गाना सुनने एवं हेलन जी का नृत्य देखने के लिए हिन्दी फिल्म देखने जाते हैं।

12. जिस प्रकार मनुष्यता हो, तो वह मनुष्य है, वैसे ही गान–पन हो, तो वह संगीत है, और लता जी का कोई भी गाना लीजिए, तो उसमें शत–प्रतिशत यह गान–पन मिलेगा। उनके स्वरों में कोमलता एवं मुग्धता का खूबसूरत सम्मिश्रण है। साथ ही, जितना निर्मल उनका जीवन की ओर देखने का दृष्टिकोण है, उतना ही निर्मलता उनके गायन में झलकता है। उनका एक–एक गीत, एक सम्पूर्ण कलाकृति है, स्वर, लय एवं शब्दार्थ की सुन्दर त्रिवेणी है।

13. यह सही है कि कलाकार कभी भी कला से बड़ा नहीं हो सकता लेकिन कुछ कलाकार ऐसे होते हैं जो अपनी मेहनत और प्रयोग के बूते कला को, ज्ञान को सीमाओं और संभावनाओं से काफी आगे ले जाते हैं। इसकी वजह से वे अक्सर कला का पर्याय बन जाते हैं। लता मंगेशकर उन्हीं चंद लोगों में शुमार है।

14. उनकी सुर–साधना, तपस्या, मेहनत, अनुशासन, संघर्ष, आस्था, विश्वास, मूल्य, मान्यताएं जितनी स्पष्ट हैं, उतनी ही उनकी पसंद, नापसंद एवं शौक बेहद सरल हैं।

15. लता मंगेशकर जी को प्रतिष्ठित **''भारत रत्न''** पुरस्कार से सम्मानित किया गया है लेकिन मैं मानती हूं कि वे केवल भारत रत्न नहीं अपितु **'विश्व रत्न'** हैं क्योंकि उनकी लोकप्रियता, उनके चाहने वाले दुनिया भर में फैले हुए हैं। वे भारत की अमूल्य धरोहर हैं एवं संगीत की दुनिया की **'विश्व धरोहर'** हैं। मां सरस्वती का वरदहस्त उन पर रहा है। उनके सुमधुर स्वरों में जो अनहद नाद सुनने को मिलता है उसे **'माता सरस्वती का प्रसाद'** ही कहा जा सकता है। लता जी का व्यक्तित्व एवं कला दक्षता इतनी विशाल है कि ऐसे महान व्यक्तित्व को सम्मान और पुरस्कार प्रदान किया जाना स्वयं सम्मान और पुरस्कारों को ही पुरस्कृत करने जैसा है।

16. वर्ष 1997 में भारत की स्वतंत्रता के 50 वर्ष पूरे होने के अवसर पर उन्हें संसद के केन्द्रीय कक्ष में अपनी प्रस्तुति देने का भी गौरव प्राप्त है। भारत के राष्ट्रपति ने वर्ष 1999 में उन्हें राज्य सभा के लिए भी नामनिर्देशित किया था।

17. एक कलाकार और मेरी कर्मस्थली इंदौर में पैदा हुई एक महिला के रूप में लता जी की विरासत पर मैं अत्यधिक गर्व महसूस करती हूं। मैं यह भी नहीं कह सकती कि इंदौर में जन्म लेकर लता जी ने इंदौर को धन्य किया या फिर

इंदौर ने लता जी को धन्य किया, किंतु मैं इतना जानती हूं कि 90 वर्ष पूर्व एक महान विभूति को जन्म देकर यह देश धन्य हुआ था।

18. महान व्यक्तियों की जीवन–गाथाएं हमारे अंदर के विश्वास को सुदृढ़ बनाती हैं। उनके रास्ते की शुरूआती बाधाएं उन्हें उनकी कलात्मक योग्यताओं का सर्वोत्तम प्रदर्शन करने और उनके स्वप्नों को साकार करने से रोक नहीं पाईं। लता जी भी एक ऐसी ही महान हस्ती हैं। उन जैसी प्रतिष्ठित हस्ती के लिए इससे अच्छा उपहार क्या हो सकता है कि उनके समृद्ध गायन और बहुमुखी उपलब्धियों के ब्यौरे वाली एक पुस्तक का प्रकाशन किया जाए। उनमें निविर्वाद रूप से संगीत की अद्भुत समझ एवं प्रतिभा है। जितनी प्रतिभा है, उतना ही समर्पण है। जब भी मंच पर गाती हैं तो मंच पर जाने से पहले चप्पलें उतार देती हैं। यह है उनकी संगीत के प्रति आदर, सम्मान, निष्ठा, सादगी एवं समर्पण। वे साज के बगैर कभी नहीं गाती हैं क्योंकि वह गायन और वादन की एकरूपता को समझती हैं।

19. ऐसी प्रतिभाशाली व्यक्तित्व का चरित्र–चित्रण जब उनकी बहन के द्वारा किया जाए तो यह स्वाभाविक ही है कि इसमें उनके जीवन से जुड़ी वह दुर्लभ जानकारियां भी शामिल होती हैं जिनसे अभी तक मुझ जैसे करोड़ों प्रशंसक अनजान हैं।

20. मैं सृजनात्मक रूप से 'मोठी तिची सावली' नामक पुस्तक लिखने के लिए श्रीमती मीना मंगेशकर खडीकर की सराहना करती हूं। मुझे विश्वास है कि इस

कार्य को पूरा करने और अपनी प्रिय बहन के जन्मदिवस पर इसका विमोचन करने के लिए उन्होंने निःसंदेह बहुत परिश्रम किया होगा। यह छोटी बहन द्वारा बड़ी बहन को सम्मानित करने के साथ–साथ उन्हें दी गई अनुपम भेंट है।

21. मैं श्री अप्पा परचुरे को भी इस पुस्तक को एक रूचिकर प्रारूप के रूप में प्रकाशित करने के लिए बधाई देती हूं। यह पुस्तक हमें लता जी के बारे में और अधिक व्यक्तिगत रूप से जानने का अवसर प्रदान करती हैं।

धन्यवाद।

————————